छत्तीसगढ़ का लोकप्रिय लोक नृत्य-पंथी

आस्था तिवारी

भारतीय दर्शन में सगुण और निर्गुण भक्ति के जो मार्ग स्वीकार किये गए, उनमें तात्विक भिन्नता होते हुए भी ईश्वर की प्राप्ति ही एकमात्र उद्देश्य है। डॉ. श्यामसुंदर दास का मत है कि–"संत कवियों ने अपनी निर्गुण भक्ति द्वारा जनता के हृदय में अपूर्व आशा उत्पन्न की। उसे कुछ अधिक समय तक विपत्ति की अथाह जलराशि के ऊपर बने रहने की उत्तेजना दी।" संत कवियों ने समाज में फैली कुरीतियों पर प्रहार किया और रुढियों को तोड़कर समाज को नयी दिशा प्रदान की। कबीरदास कहते हैं–

"कबीरा खड़ा बाजार में सबकी मांगे खैर

ना काहूँ से दोस्ती ना काहूँ से बैर।"

'सर्वे भवन्तु सुखिन' की भावना की कामना लिए उनके इस दोहे में मानवता का सन्देश है, किंतु स्वार्थान्धता से प्रेरित दम्भी मनुष्य ने जब-जब समाज में ऊँच-नीच, जात-पात, धार्मिक कट्टरता, बााडंबर, महिलाओं पर अत्याचार, वैमनस्य की भावना का प्रसार किया, धर्म पर अधर्म ने स्थापत्य जमाना चाहा तब-तब हमारे महापुरुषों ने अवतार लिया।

संतों ने ईश्वर के निकट पहुँचने के लिए जाति के बंधन को तोड़ा उनके हृदय से निकली वाणी और कर्म से उपजी स्थिति में न केवल हिंदुओं को अपितु मुस्लिम शासकों को भी अपनी ओर आकर्षित किया। (छत्तीसगढ़ी साहित्य दशा और दिशा, पृष्ठ 196, नंदकिशोर तिवारी)

छत्तीसगढ़ के समाज सुधारक और अध्यात्म पुरुष गुरु घासीदास का जन्म 18 दिसंबर को बिलासपुर जिला स्थित ग्राम गिरौदपुरी (वर्तमान में बलौदाबाजार : भाटापारा जिला में महंगू दास और अमरौतिन बाई के तीसरे पुत्र के रूप में हुआ। जिस समय गुरु घासीदास का जन्म हुआ समाज पतन की ओर अग्रसर था। समाज में छुआ-छूत, जात-पात, ऊँच-नीच फैली हुई थी। गुरु घासीदास ने सामाजिक कुरीतियों को दूर कर 'मनखे-मनखे एक समान' कहकर मानवता का संदेश दिया। कहा जाता है, जगन्नाथपुरी जाते समय घासीदास बीच रास्ते से ही सतनाम-सतनाम कहते हुए लौट आये और गिरौदपुरी से एक मील दूर एक पहाड़ी पर अवरा-घवरा वृक्ष के नीचे बैठकर तपस्या करने लगे। छत्तीसगढ़ में सतनाम पंथ के प्रवर्तक गुरु घासीदास को अवतारी पुरुष माना जाता है। घासीदास का विवाह सफ़ूरा बाई से हुआ था। संसार में फैले दुख और असमानता, शोषण और गरीबी ने उन्हें संसार से विमुख कर दिया और सांसारिक माया उन्हें मिथ्या प्रतीत होने लगी। अपनी पत्नी को समझाते हुए संसार का त्याग कर साधना की राह पर घासीदास निकल पड़े और उनके मुख से यह वाणी निकली–

“सतनाम के पुजारी गुरु गुने मनमा

नई रहौं तपसिया करे जाहों वनमा

नारी लै समझा के कहै सुन ले सफूरा बाई

बद्दी नई दौ दुनिया लै मोर फुटहा हे कमाई

आगे वे कहते हैं–

आगी अंगरा जईसे दुःख तन म

माया धन जीवन के मोह नई हे मन में।"

इस प्रकार मोह-माया के बंधन से दूर घासीदास जी घर से निकल जाते हैं और उनकी तपस्या सफल होती है। ज्ञान के प्रकाश से चहूँ दिशाओं को उन्होंने प्रकाशित किया, जिसने समस्त मानव जाति को दिशा प्रदान की। अपने विचारों को सर्वसाधारण तक पहुँचाने के लिए घासीदास ने उन्हें सात सूत्रों में बाँधा जो सतनाम पंथ के प्रमुख सात सिद्धांतों के नाम से प्रसिद्ध हैं–पहला सतनाम पर विश्वास रखो, दूसरा-मूर्ति पूजा मत करो, तीसरा-जाति-भेद के प्रपंच में मत पड़ो, चौथा-मांसाहार मत करो, पाँचवाँ-शराब मत पियो, छठवाँ-अपराध में खेत मत जोड़ो और सातवाँ-पर स्त्री को माता समझो। संत घासीदास ने सतनाम की अलख जगाई सतनामी संस्कृति छत्तीसगढ़ की बहुरंगी संस्कृति का हिस्सा है। इनके द्वारा गाया जाने वाला गीत पंथी गीत और नृत्य को पंथी नृत्य कहा जाता है।

पंथी गीत में गुरु घासीदास जी के जीवन और दर्शन की सुंदर झलक दिखायी देती है। डॉ. परदेशी राम वर्मा ने पंथी गीतों का मुख्य रूप से निम्न वर्गीकरण बताया है पंथी गीतों में जिन मुख्य विषयों का समावेश होता है वे इस प्रकार हैं– पहला गुरु वंदना, दूसरा गुरु जी के द्वारा प्रदत्त चिन्ह, तीसरा गुरु घासीदास एवं उनके परिवार के संबंध में वंदना गीत, चौथा गुरु की आरती, पाँचवाँ गुरु के प्रति प्रेम, छठवाँ गुरु के जीवन की घटनाओं पर केंद्रित गीत, सातवाँ माता सफूरा पर केंद्रित गीत, आठवाँ गुरु घासीदास के अमृत वचन पर गीत, नवाँ सत्य नाम की महिमा के गीत, दसवाँ कायाखंडी भाव-गीत, ग्यारहवाँ गिरोधपुरी पर गीत, बारहवाँ मिनीमाता और महापुरुषों पर श्रद्धापूर्वक रचित गीत, तेरहवाँ गौ-माता पर गीत, चौदहवाँ सामाजिक समस्या और आडंबर पर व्यंगात्मक गीत। (छत्तीसगढ़ी गीत लोक कंठ कलकल निनाद, प्रधान संपादक जमुना प्रसाद कसार)

गुरु घासीदास के जन्म पर आधारित देवदास बंजारे द्वारा प्रस्तुत नृत्य के गीत की पंक्तिया इस प्रकार हैं–

"बेटा खेले कोरा म, जोगी नाचे अंगना म

हे अमरौतिन वो दाई अमरौतिन वो।"

इसी प्रकार गुरु वंदना पर गीत की कुछ पंक्तियाँ हैं–

"सत्यनाम सत्यनाम सत्यनाम सार गुरु महिमा अपार

अमृतधार बहाई दे, हो जाही बेडा पार सत्यगुरु नाम

लखाई दे

ये तन ना नाना रे नाना मोर नाना रे

सत्यलोक ले सतगुरु आये हो सतगुरु आये हो..

ये अमृतधार ल गुरुबाबा लाइन ओ घासीबाबा लाइन

सत्य के तराजू म दुनिया ल तोलो हो दुनिया ल तोलो

गुरु जी बताइन् सच सच बोले हों सच सच बोले हों....

सच के बोलैया मन हावे दुई चार

वही गुरु है हमार सतगुरु नाम लखाई दे

हो जाही बेडा पार सतगुरु नाम लखाई दे ...।"

पंथी नृत्य की शुरूआत में सभी नर्तक पंक्तिबद्ध होकर वृत्त में खड़े होते हैं। बीच में मुख्य गायक व मांदर वादक खड़ा होता है। जयस्तंभ जिसे जैतखाम कहा जाता है की पूजा और आरती के बाद गीत की शुरुआत होती है। बाबा घासीदास की वंदना से संत काव्य में गुरु को सर्वोपरि माना जाता है और पंथी नृत्य में भी बाबा घासीदास की महिमा का गीत गाते हुए गुरु के प्रति आभार व विश्वास व्यक्त करते हुए नृत्य किया जाता है, इसमें चोला माटी का शरीर अर्थात् देह की नश्वरता की ओर संकेत है। मिट्टी के चबूतरे पर जिस प्रकार खंबा गाड़ा जाता है उसे गीत के माध्यम से इंगित किया जाता है–

"माटी के काया माटी के चोला

के दिन रही बता दे मोला

ये तन हावे मोर माटी के खिलौना हो

माटी के ओढना हो माटी के बिछौना हो

ये माटी के काया छोड़ जाए तोला।"

(डॉ. परदेसीराम वर्मा, पृष्ठ 128, छतीसगढ़ी गीत लोककंठ का कलकल निनाद, प्रधान सम्पादक जमुना प्रसाद कसार)

गायक की गति के साथ ही नर्तकों की गति शनै-शनै बढ़ती है। पहले पैर धीमी-धीमी गति से थिरकते रहते हैं और हस्त संचालन भी नर्तक धीरे-धीरे करते रहते हैं। जैसे-जैसे गीत की गति बढ़ती है तब पूरा शरीर द्रुतगति से गीत की गति के आधार पर संचालित होता है। गीत की धुन और लय के अनुसार शारीरिक

मुद्राएँ बदलते रहते हैं। गति और लय का समन्वय नर्तकों के गतिशील हाव-भाव में देखा जा सकता है। मुख्य नर्तक पहले गीत की कड़ी उठाता है और अन्य नर्तक दोहराते हुए तेजी से नाचते हैं। अंत में सभी मिलकर एक पिरामिड बनाते हैं और शांति के प्रतीक सफेद झंडे को सबसे ऊपर चढ़ा नर्तक लहराता है या हाथ जोड़ता है। यही इस नृत्य के सौंदर्य और आकर्षण की पराकाष्ठा होती है। कुछ पंथी नृत्य में एक के बजाय तीन चार ध्वजा से शांति का संदेश प्रसारित किया जाता है। जयस्तंभ और उस पर ध्वजा प्रेम सद्भाव और भाई-चारे का प्रतीक होती है। जैतखाम का डंडा सात हाथ का बना होता है। डॉक्टर परदेशी राम वर्मा के अनुसार-" सातों दिन सजग रहकर सन्मार्ग पर चलने हेतु प्रेरणा देता है, सात हाथ का डंडा आत्मरक्षा के प्रति सजगता के साथ ही यह झंडा सत्य क्षमा, दया, अहिंसा, करुणा, प्रेम और समर्पण के महत्व को भी रेखांकित करता है साथ ही सतनाम पंथ के पावन सिद्धांतों का भी प्रतीक इन्हीं सिद्धांतों का वर्णन हमें गीतों के माध्यम से मिलता है।" जैसे–

पहला–मूर्ति पूजा का विरोध

"मंदिर माँ का करे जीवन अपन घर ही के देवता मनाई बा।"

दूसरा–हिंसा मत करो

"तरफत मछली ला गुरु पानी माझी ले

वही दिन मछली ला दूसर जन्म मिले।"

तीसरा–हृदय की पवित्रता का संदेश

"हृदय के भाव हे आरुग फूल

तो ला ईही ला चढ़ावा गुरु आरुग फूल।"

चौथा–सतनाम ही सार है

"गुरु महिमा अपार।"

पांचवा–संयम से रहने की सीख

"यह नर तन पाए के चोरी तय झन करबे।"

छठवाँ-बााडंबर का विरोध

“भरम भरे देवता ला, घर के मठिया भाई ला

कोड के निकाल दिहु त सत के जमाना आही।”

(श्री पुराणिक चेलक के गीत से)

सातवाँ–समानता का संदेश

“मनखे मनखे ला जान सगा भाई के समान

बाबा घासीदास गुरु समझाओ हवे हो..

मानुष चतुर सुजान

आगे....

ये मा जात कइसे तय हा बनाइ डारे हो।”

‘पंथी’ छत्तीसगढ़ में सतनामी समाज द्वारा किया जाने वाला पारंपरिक लोक प्रिय नृत्य है। सतनाम धर्म के प्रतीक चिन्ह ‘जैतखाम’ की स्थापना व गुरु घासीदास जी की जयंती पर्व पर परंपरागत रूप से पंथी गायन के साथ नृत्य किया जाता है। पंथी नृत्य की शुरूआत गुरु वंदना से होती है, जिसे ‘सुमरनी या आह्वान’ कहा जाता है। पंथी नृत्य पथ निर्धारित कर पंक्तिबद्ध होकर व्यवस्थित रूप में किया जाता है, इस कारण इसे पंथी नृत्य कहते हैं व सतनाम धर्म सतनाम पंथ, जो कि एक पथ के रूप में भी जाना जाता है।

पंथी नृत्य, भांगड़ा से भी अत्यंत तेज गति का नृत्य माना गया और इसे विश्व का सबसे तेज नृत्य कहा जाता है। इस नृत्य को पंथी सम्राट देवदास बंजारे जी व श्री मिलापदास बंजारे जी एवं उनके सहयोगी साथियों ने देश-विदेश में प्रतिष्ठित किया है। सतनामी समाज में वर्तमान में पंथी के पुरोधा के रूप में सतलोकी देवदास बंजारे जी के गुरु आदरणीय श्री पुरानिक लाल चेलक जी को जाना जाता है।

पंथी का शाब्दिक अर्थ

पंथी शब्द का अर्थ राहगीर होता है, सतनाम धर्म में सतनामी पंथी नृत्य करते हैं। सतनाम मार्ग में चलते हुए ये सतमार्ग के प्रचार करने वाले नृत्य व गायन विधा को पंथी की संज्ञा दी गयी है।

पंथी नृत्य की शुरुआत व विकास

पंथी की उत्पत्ति के सम्बंध में कुछ मत समाज में प्रचलित हैं।

1. रावटी–कुछ विद्वान कहते हैं कि जब गुरु घासीदास जी छत्तीसगढ़ की पावन धरा में जन जागृति व चेतना के प्रसार के उद्देश्य से गाँव-गाँव में सतनाम का उपदेश देते गाँव में अंदर जाने से पहले उस गाँव

के बाहर किसी स्थान पर तम्बू लगाकर पड़ाव डालते और उपदेश देते थे। इसे ही रावटी कहा जाता है। गाँव वालों द्वारा गुरु जी के स्वागत के रूप में पंथी नृत्य का जन्म हुआ।

2. यह भी माना जाता है कि जब गुरु घासीदास जी ने सर्व प्रथम जैतखाम की स्थापना की, तब गोलाकार पंक्तिबद्ध रूप में लोग जैतखाम के चारों ओर सतनाम का जयघोष करते हुए झूमने लगे। इसी ने बाद में पंथी नृत्य का रूप धारण किया।

पंथी की उत्पत्ति के विषय में एक मत यह भी है कि गुरु घासीदास जी के बालक दासजी समाज को स्वालम्बन तथा आत्मरक्षा व समस्त प्राणियों की रक्षा करने की कला में लोगों को दक्ष करने के लिए मानव समाज में 'अखाड़ा प्रथा' की नीव डाली, जिसमें लोगों को अस्त्र-शस्त्र, कुश्ती, व्यायाम विद्या सिखायी जाती थी, जिससे वे समाज व देश की रक्षा के लिए तत्पर रहें। इसी अखाड़ा में अखाड़ा विद्या अध्ययन करने वालों के द्वारा सामूहिक रूप से कलात्मक प्रदर्शन ही पंथी नृत्य के रूप में विकसित हुआ है ऐसा माना जाता है।

पंथी नृत्य की प्रमुख विशेषताओं में—सादगीपूर्ण वेश-भूषा, भावप्रवणता, पिरामिड बनाना, नर्तकों के साथ वादक का भी नृत्य में सम्मिलित होना, द्रुत गति का नृत्य, पंथी नृत्य में आध्यात्मिक संदेश के साथ मानव का उत्थान और, शांतरस व ओज युक्तशैली विद्यमान है।

पंथी के प्रकार

गीत और नृत्य का संगम पंथी एक ऐसी मंचीय कला है, जो दो प्रकार से की जाती है। खड़े होकर और बैठकर। दोनों ही प्रकार के नृत्य देव दास बंजारे जी की साधना में देखा जा सकता है। दोनों में ही युवती युवक पार्टी होती है। महिला-पुरुष दोनों ही पंथी दल में एक व्यक्ति नृत्य का नेतृत्व करने वाला निर्धारित होता है। नृत्य की मुद्राएँ बदलने पर वह इशारों में सभी नर्तकों को निर्देशित करता है। मांदर वादक भी नृत्य में सम्मिलित होता है और अन्य नर्तकों के साथ ताल मिलाकर और झुककर नृत्य करता है।

खड़े साज

खड़े साज पंथी नृत्य को ही विश्व का सबसे तेज नृत्य माना जाता है, इसमें गीत को मुख्य गायक के प्रस्तुत करने के बाद दल के समस्त लोग दुहराते हैं। धीरे-धीरे थिरकते हुए पैर गीत की तीव्रता के साथ ताल मिलाते हैं। मुद्राएँ बदलती रहती हैं। अंत में पिरामिड बनाकर श्वेत ध्वजा लहराना बड़ा ही रोचक प्रतीत होता है।

बैठ साज

बैठ साज विधा में वादक केंद्र में बैठकर वाद्य यंत्रों को बजाते हैं। मांदर, झाँझ बजाते हुए एक गायक और एक रागी होते ही हैं। जबकि खड़ी साज में गायक के गीत को नर्तक दल के प्रत्येक लोग मिलकर राग देते हैं। बैठ साज पंथी नृत्य के नर्तक विराम देकर धीमी गति से नृत्य करते हैं।

पंथी की वेश-भूषा : सादगीपूर्ण

पंथी नृत्य प्रारंभिक दौर में पुरुष प्रधान नृत्य रहा, लेकिन अब महिला पंथी समूह भी हैं। विश्व की भिन्न-भिन्न सभ्यता, संस्कृति, कला, गीत, संगीत, वादन, नृत्य, जीवन-शैली, वेश-भूषा, आभूषण इत्यादि का अपना एक अलग रंग होता है। पंथी नृत्य की प्रस्तुतीकरण के लिए भी एक आकर्षण युक्त वेश-भूषा किंतु सादी वेश-भूषा होती है। पुरुषों द्वारा किये जानेवाले पंथी नृत्य में पुरुष सफेद कुर्ता या पारंपरिक अंगरखा, गले में सततागी धारण करते हैं। मस्तक में चंदन का तिलक शोभायमान होता है। तिलक मन को एकाग्रचित कर शांत करता है। घुटने तक सफेद धोती के ऊपर कमर पर अन्य रंग का कमरबंध भी बांधा जाता है, जिससे आकर्षण में अभिवृद्धि होती है। हाथों में सफेद रूमाल भी रखते हैं। मांदर और झाँझ की धुन के साथ पैरों में घुँघरूओं की खनक पंथी नृत्य को और भी लोक-लुभावन बना देती है।

महिलाओं की वेश-भूषा भी सादगीपूर्ण होती है, वे श्वेत साड़ी ही धारण करती हैं। महिलाएँ भुजाओं में नांगमोरी, कमर में करधन, गले में कंठी-माला तथा हाथों में सफेद, हरी चूड़ियाँ, पैंठी, पैरों में घुँघरू, बालों में केसरी व सफेद कागज के बने आकर्षक गजरे धारण करती हैं। इसके आलेख मस्तक पर चंदन का तिलक लगाती हैं। विवाहित स्त्रियाँ अपनी माँग स्वेत चंदन से भरती हैं। यह नृत्य धीमी धुन में मंगल भजन से प्रारंभ होकर तेज नृत्य व पिरामिड निर्माण की पराकाष्ठा तक जा पहुँचता है। कुछ महिला समूह पंथी नृत्य में 'फुलकांछ' के लोटे को सिर पर रखकर संतुलन बनाकर नृत्य प्रस्तुत करती हैं। महिला पंथी पार्टी में उम्रदराज पंथी नर्तकी साड़ियाँ पहनती हैं और नव-युवतियाँ सलवार कमीज़ और दुपट्टा पहन कर नृत्य करती हैं। शृंगार सादा ही होता है।

पंथी नृत्य में नारी शक्ति के आगमन का श्रेय पंथी सम्राट देवदास बंजारे जी को दिया जाता है। पंथी दल में पदार्पण करने वाली नारियों में प्रमुख नाम कु. चित्रपाल, सोमूदास गुप्ता, लक्ष्मी शर्मा, आशा खरे, उषा खरे, मालती रजक और रजनी रजक हैं। महिला पंथी पार्टी में तोरण बाई, जुगा बाई का नाम प्रमुख है। गंगा राम शिवारे की मण्डली में भी महिला पंथी कलाकारों की उपस्थिति ने अन्य महिला कलाकारों का मार्ग प्रशस्त किया।

पंथी दल में नर्तक, वादक व गायक तीनों मिलाकर आदर्श संख्या 15 होती है। बदलते परिवेश में यह संख्या कम-ज्यादा हो सकती है, जो मण्डली पर निर्भर करती है।

पंथी नृत्य के वाद्य यंत्र

पंथी नृत्य के प्रारंभिक काल में लोग गोल घेरा बनाकर ताली बजाते हुए नृत्य करते और सतनाम के जयघोष करते थे, जो अब वाद्य यंत्रों के साथ जारी है। पंथी नृत्य व गायन में नवीनता का संचार हो रहा है मांदर, झाँझ और झुमका प्रमुख वाद्य यन्त्र है।

पंथी की लोकप्रियता व समाजोन्मुख महत्त्व

पंथी कला नृत्य, गायन व वादन का ऐसा त्रिवेणी संगम है, जिससे समाज का कोई भी पक्ष अछूता नहीं रहा है। अपनी मनोरम भावप्रवण प्रस्तुतीकरण के कारण जनमानस के हृदय पर इसने अपनी अमिट छाप छोडी है। पंथी की लोकप्रियता का यह प्रमाण है कि 2016 आर्ट ऑफ लिविंग फाउंडेशन के वर्ल्ड कल्चर फेस्टिवल, जिसमें 155 देशों के कलाकारों ने भाग लिया। छत्तीसगढ़ के 150 कलाकारों ने 58 मांदर 116 झाँझ व झुमका के साथ पंथी नृत्य की अद्भुत प्रस्तुति देकर दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर दिया। 'मनखे मनखे एक समान' के सन्देश विश्व बंधुत्व की भावना से ओत-प्रोत पंथी कला ने समाजोपयोगी विषयों को समाहित किया है। विश्व पटल पर पंथी गीत और नृत्य को पहचान दिलाने वालों में प्रमुख हस्ताक्षर श्री देवदास बंजारे का नाम आदर से लिया जाता है। 64 देशों में जिन्होंने पंथी नृत्य के माध्यम से बाबा घासीदास के सन्देश को सहज, किंतु आकर्षक एवं भावपूर्ण अभिव्यक्ति के द्वारा जीवंत और कालजयी बना दिया।

सन्दर्भ

1. छत्तीसगढ़ी साहित्य दशा और दिशा, नन्दकिशोर तिवारी
2. डॉ. परदेशी राम वर्मा, छत्तीसगढ़ी गीत लोक कंठ कलकल निनाद, प्रधान संपादक जमुना प्रसाद कसार, पृष्ठ 128
3. डॉ. पद्मा डडसेना, अगासदिया, सम्पादक डॉ. परदेशीरम वर्मा
4. डॉ. अनिल भतपरही, shapemedia
5. श्री आसकरण दास जोगी antaskegoth.blogspot.com
6. जनश्रुति

आस्था तिवारी,

सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, शा. नवीन महाविद्यालय

बेरला, जिला-बेमेतरा